Topic - 36

प्रातिपदिक एवं सुबुत्पत्ति

अर्थवद् धातु प्रत्ययः प्रातिपदिकम् ।

धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वा — अर्थवच्छब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसंज्ञं स्यात् ।

प्रातिपदिक संज्ञा के लिए चार बातें आवश्यक है: —

जिस शब्द का कुछ न कुछ अर्थ हो, वही प्रातिपदिक हो सकता है।

वह अर्थवान् शब्द धातु न होना चाहिए।

उस अर्थवान् शब्द को प्रत्यय भी न होना चाहिए।

वह अर्थवान् शब्द प्रत्ययान्त भी न होना चाहिए।

इस व्यवस्था से

रामेषु - इस प्रत्ययान्त समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती। यदि प्रत्ययान्त की प्रातिपदिक संज्ञा होती तो 'सुपो धातु - ०' से 'सु' का लोप हो जाता जो कि अभीष्ट नहीं है।

कृत्तद्धितसमाश्च

कृत्तद्धितान्तौ समासाश्च तथा स्युः ।

कृत्-प्रत्यय 'अष्टाध्यायी' के तृतीय अध्याय के 'कृदतिङ्' के अधिकार में तथा तद्धित प्रत्यय चतुर्थाध्याय के 'तद्धिताः' के अधिकार में पढ़े गये हैं। इनका विशेष विवरण तत्तत् स्थलों पर ही प्राप्त होगा।

प्रत्ययः

आपञ्चमपरिसमाप्तेरधिकारोऽयम्।

परश्च।

अयमपि तथा।

ङ्याप्प्रातिपदिकात्

ङ्यन्तादाबन्तात् प्रातिपदिकाच्चेत्यापञ्चमपरिसमाप्तेरधिकारः।